पुणे। फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रूपा। साथ हैं ब्र.कु.दीपक व ब्र.कु.गीतिका।

जमशेदपुर। 'अलविदा डायबिटीज' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.श्रीमंत, ब्र.कु.अंजू, जुस्को के डायरेक्टर आशीष माथुर तथा अन्य।

रायगढ़। थाना अधिकारी श्रीमती संतोषिनी ओरम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अस्मिता व ब्र.कु.पार्वती।

फिरोजाबाद। जिला अधिकारी संध्या तिवारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरिता।

यात्रा, 2013
से कोटा
समारोह
द्वारा तनावमु
सारंगपुर

सारंगपुर। शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा अभियान में ब्र.कु.विजयलक्ष्मी को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए लायंस क्लब के सदस्य।

आमेट। आमेट के राजा प्रेम प्रकाश चूण्डावत तथा रानी आनंद कुवर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.रीटा एवं ब्र.कु.पूनम समूह चित्र में।

एकता व भाईचारे ....

-पेज 1 का शेष

की आवश्यकता है जो कि केवल आध्यात्मिक सिद्धांतों के द्वारा ही लाया जा सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि समाज को हिंसामुक्त बनाने के लिए एक परमसत्ता में विश्वास, आपसी भाईचारा तथा आध्यात्मिक बुद्धिमता की जरूरत है। मतभेद ही हिंसा का प्रमुख कारण है इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी कमजोरियों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को दिव्य ज्ञान एवं राजयोग मेडिटेशन द्वारा समाप्त कर स्वयं को तथा समाज को दुख, अपराध आदि से मुक्त करें। यदि हम जीवन को सुख शांति से जीना चाहते हैं तो हमें आध्यात्मिक सत्यों को अपनाना ही होगा।

इस सेमिनार के अंतर्गत 'इनर-फेथ मीट' एवं 'टॉक शो' भी आयोजित किया गया जिसमें बौद्धी, क्रिश्चयन, बहाई, ज्यूज़, हिन्दु तथा अन्य कई आध्यात्मिक संगठनों ने भाग लिया। उन्होंने स्वीकार किया कि हिंसा को हिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता। देश में चारों ओर तत्काल ही नागरिकों के अंदर जागरुकता लाने के लिए अभियान आरंभ किये जाने चाहिए। अंत में उपस्थित दर्शकों को स्वयं तथा समाज से हिंसात्मक वृत्तियों को समाप्त करने के उपायों पर विचार व्यक्त करने को कहा गया।

जहां शांति ...

-पेज 2 का शेष

संसार को एक तरफ रखकर बुद्धत्व को अपनाया है। परमात्मा को सारथी पद देकर, वे जहाँ ले जायें वहाँ जाकर और वो जैसा कहें वैसा करके असत्य पर विजय प्राप्त की है और दुर्योधन के साथ कृष्ण की सारी सेना थी तो भी परिणाम क्या आया?

यह घटना मात्र महाभारत में अकेले अर्जुन के जीवन की नहीं है। प्रतिपल हरेक व्यक्ति के जीवन में परिस्थिति और पसंदगी का अवसर मौजूद है। एक तरफ आपके जीवन में संसार के सारे सुख मौजूद हों, समस्त संसार का साम्राज्य आपके समक्ष हो और दूसरी तरफ परमात्मा हो तब आप किसको पसंद करेंगे? सौ में से निन्यानवे प्रसंग आपके जीवन में ऐसा ही बनेगा। फिर आप अपने विवेक को आपके अंदर छिपे हुए साक्षी को एक तरफ कर देंगे और आप अपने मन और संसार को ही जीतने देंगे। क्योंकि आप उसे मूल्यवान मानते हैं। दुर्योधन की पसंदगी पर आप हंसेंगे नहीं क्योंकि आपके अंदर बैठा दुर्योधन प्रति पल यही काम करता रहता है। अर्जुन और दुर्योधन दोनो ही आपके अंदर मौजूद है। युद्ध कहीं और नहीं चल रहा परंतु आप अपने विवेक को दबाकर हमेशा अपने अंदर बैठे अहंकार रूपी दुर्योधन के मस्तक को ऊँचा कर जिताने के लिये थपथपाते रहते हैं।

कभी आप धन को महत्व देते हो, कभी पद-पोजीशन के पीछे दौड़ते हो। कभी मकान और सुख-सुविधा से भरी ज़िंदगी के सामने झुक जाते हो।

संसार के विस्तार की चकाचौंध में गुम होकर एक तरफ जाने की आपकी हिम्मत ही नहीं होती। सोचते हैं अकेले मेडिटेशन, अकेले आत्मज्ञान किस काम का? उसे क्या खायेंगे पीयेंगे? उसे ओढ़कर दुनिया को जीत सकेंगे क्या? और इन सब बातों में पड़कर ही उस 'एक' को साइड पर छोड़कर पहले संसार को पकड़ने में लग जाते हैं।

लेकिन जीवन के युद्ध में जब पकड़ ढीली पड़ जाए, हाथ में से गांडिव सरकने लगे तब अंदर बैठा (साक्षीभाव) सारथी ही काम आता है। अहंकार सदा मस्तक ऊँचा करके मस्तक के पास ही बैठ सकता है। (उसे मस्तक के ऊपर चढ़कर बैठने में रस आता है) जबकि विवेकशील व्यक्ति विनम्र है। वो परमात्मा के पग के पास बैठकर भी आनंद अनुभव कर सकता है और परमात्मा की पहली नज़र तो विवेकशील व्यक्ति पर ही पड़ती है।

महाभारत की यह प्रतीक कथा युद्ध मैदान छोड़ कर भागने थकने वाले लोगों के पक्ष में नहीं। जीवन के कुरुक्षेत्र को छोड़कर सन्यासी भी होने लगे तब भी कृपा उनके पक्ष में नहीं है। वे तो कहते हैं कि भीड़ में, संसार की भागदौड़ में, भरे बाज़ार में, अनेक उपद्रव भरे कुरुक्षेत्र में ही आपको भगवद्गीता को जन्म देना है। जीवन में और जगत में जितनी भी आसुरी शक्तियां हैं उनकी शरण में जाना नहीं है। युद्ध की स्थिति है, शस्त्र उठाइये। परमात्मा को साथ रख और सारथी पद सौंप कर लड़ने का आरंभ करें और यह लड़ाई कहीं बाहर नहीं है। जिसके सामने लड़ना है वह आपका ही दूसरा रूप है, आपके अंदर पड़ी हुई आसुरी वृत्ति और अहंकार की भावना है। जब परमात्मा आपके साथ है तो अवश्य ही मानना कि जीत सुनिश्चित है।

मदद करें पर निष्काम भाव से

प्रश्न :- आप जब बीमार होते हैं तो मैं आपकी देखभाल करती हूँ और जब मैं बीमार हुई तो आपने पूछा भी नहीं ? इससे मुझे बुरा तो लगेगा ही ना ?

उत्तर :- फिर थॉट और फीलिंग किस प्रकार के क्रियेट हुए ? परिणाम यह होगा कि अगली बार जब आप बीमार पड़ोगे तो मैं आपके लिए कुछ नहीं करूंगी। यह मेरा फैसला है। इस बिलीफ सिस्टम को बदलने की आवश्यकता है कि मैं वो करूंगी जो करते हुए मुझे अच्छा लगता है। यह नहीं कि मैं वो करूंगी जो आप रिटर्न में करेंगे। क्योंकि उस बिलीफ सिस्टम से मुझे रिजल्ट क्या मिला ?

मैंने आपके लिए इतना किया, आपने मेरे लिए क्या किया या मैंने पूरा जीवन आपके लिए ही किया, आपने मेरे लिए क्या किया ? इस बिलीफ सिस्टम को धीरे-धीरे चेंज करते जायें और वो बिलीफ सिस्टम अपनायें जो हमारे जीवन को सरलता, सहजता और खुशी से भर दे। यदि मैं अपने बिलीफ सिस्टम को बदलती हूँ तो मैं कह सकती हूँ कि मैं किसी चीज की इच्छा किये बगैर अपना कार्य अच्छी तरह से कर सकती हूँ। यह संभव है। एक बार में तो नहीं होगा, इसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न :- किसी के लिए कुछ किया तो फिर समय पर स्वयं कुछ पाने की आशा रखना तो जायज है।

उत्तर :- क्योंकि आपने वो प्रोग्रामिंग कर ली थी कि मैंने आपके लिए अच्छा किया है तो आपको भी अच्छा करना ही है। ये मेरा बिलीफ सिस्टम है कि जिसके लिए मैं अच्छा करूंगी, उसको मेरे लिए अच्छा करना ही है। जैसे ही वो अगर वैसे नहीं करते हैं या वो उस तरह से नहीं करते हैं तो मैं दु:खी हो जाती हूँ, क्योंकि हर एक का अलग-अलग व्यक्तित्व होता है, अलग-अलग नेचर होती है। आपकी नेचर है कि आप बहुत ज्यादा करते हैं आप दावत देंगे तो आप इतना कुछ कर देंगे, आप गिफ्ट देंगे तो इतना देंगे कि पूछो मत, आप मेरे लिए कुछ भी नहीं कर रहे हैं। इसमें ये हो सकता है कि हमारी स्थिति उस लायक न हो। जब आप मेरे घर पर आओगे तो मैं पूछूंगी कि आप चाय पियोगे क्या ? आप मेरे घर आये थे तो मैंने आपके लिए पूरा डिनर बनाया था और आप मुझे पूछ रहे हैं कि चाय पीयोगे कि नहीं पीयोगे ? तब आप दु:खी हो जाते हैं। यही सेम चीज इमोशनल लेवल पर भी कार्य करती है। जितना मैं आपके लिए कर रही हूँ, मेरा ये बिलीफ होता है कि आप भी उसी तरह से मेरे लिए करें। ये बहुत डीप बिलीफ सिस्टम है। जहां मुझे बुरा लगना शुरु हुआ तो हमें वहीं रुक जाना चाहिए और यह चेक करना चाहिए कि वह कौन-सा बिलीफ सिस्टम है जिसके कारण हमारा यह थॉट क्रियेट हुआ। जो भी नेगेटिविटी मुझे होती है उसके पीछे कोई न कोई बिलीफ सिस्टम है जिसे चेक कर चेंज करने की आवश्यकता है। इस श्रृंखला में हम जो-जो सीख रहे हैं उसे अपने जीवन में धारण करते जायें जिससे हमारा जीवन खुशियों से भरा रहे।

इटावा–सिविल लाइंस। जिला जज की धर्मपत्नी पूनम रस्तोगी के साथ आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु.नीलम।